पौधशाला

पौधशाला में स्बजियों की स्वस्थय पौध स्बजी उत्पादन में वृद्धि करता है। अतः पौधशाला प्रबंधन करना अति आवश्यक है। मिट्टी में रोग फैलाने वाले फुफंदी तथा जिवाणुओं के सक्रिय रहने पर पौधे गलने लगते हैं। हानिकारक कीड़े, पौधे या पत्तीयों को काटकर एवं विशाणु ग्रसित होकर नुकसान पहुॅचाते हैं। किसान उचित ध्यान देकर तथा पोशण की सही जानकारी से स्वस्थय पौध/बिछड़े तैयार कर सकते।

पौधशाला के लिए स्थल चयन

पौधशाला के लिए स्थल चयन **ए**क महत्त्वपूर्ण बिन्दु है :–

क जमीन थोड़ी ऊँची हो।
ख स्थल घर के पास हो।
ग मिट्टी उपजाऊ हो तथा जल निकासी की सुविधा हो।
घ सालों भी पानी की उपल्बधता।
ड सूर्य का प्रका ा पुरे दिन उपल्बध रहे।
च मिट्टी का पी0 एच0 मान 7 के लगभग हो।
छ पौधशाला की उचित घेरा हो, ताकि जानवर नुकसान न पहुँचाए।

पौधशाला में क्यारियाँ बनाने से पहले एक बार गहरी जुताई बहुत आव यक है। मिट्टी भुर–भुरी बनाने के बाद सभी खरपतवार निकाल देना चाहिए। मिट्टी की तैयार के बाद 10 फिट लम्बाई एवं0 3 फिट चौड़ाई आकार की क्यारियाँ बनाए; प्रति क्यारी में 10–15 कि0 ग्रा0 सड़ी गोबर की खाद एवं 1 कि0ग्रा0 करंज या नीम खल्ली की चूर्ण अच्छी तरह मिलाए। यदि पौधशाला की मिट्टी भारी है तो 5–6 कि0ग्रा0 प्रति क्यारी में बालु मिलाए।

पौधशाला स्थान के मिट्टी का उपचार अति अवा यक है। पौध ाला में लगने वाली बिमारियों की रोकथाम हेतु मिट्टी को सूर्य के तेज प्रकाश से उपचारित करने को सौर्यकरण करते है। अप्रैल के प्रथम सप्ताह में क्यारियाँ तैयार के बाद आवश्यक नमीपन कर सफेद पारदर्शी प्लास्टिक की चादर से ढक कर चारों और मिट्टी से दबा देना है। इससे क्यारी से हवा एवं भाप बाहर नही निकल पाता है। क्यारी को इस तरह 40–50 दिनों तक ढका रखने से अधिक तापक्रम के कारण बहुत से रोग पैछा करने वाले सूक्ष्म जरव स्वतःनश्ट हो जाते हैं।

बीज भाोधन के लिए ट्राइकोडर्मा 5–10 ग्राम/ कि0ग्रा0 बीज की दर से बीजोपचार करें या 20–25 ग्राम प्रति 10 वर्गफीट क्षेत्र की दर से क्यारी में मिलाकर फुव्वारा से हल्का पानी

डालें। इसके अलावा कार्बोन्डाजिम 2.5 ग्राम/कि0ग्रा0 बीज का उपचार करें। बीज की बुआई उचित दुरी पर लाइन में करें। बुआई के बाद बीज को क्यारी में उपल्बध मिट्टी से ही ढकें। अकुंरण के बाद ट्राइकोडार्म 10 ग्राम लीटर पानी में घोल बनाकर अच्छी तहत से पोधशाला के क्यारी को पटावन करें।

आशिष दास
समन्वयक